बड़े धर्मों में
एकेश्वरवाद

लेखक
माहताब अकबर
संपादक
एस० कौसर लईक़

विषय-सूची

"कहो अल्लाह (ईश्वर) एक है, वह ईश्वर बेनियाज़ है उसे किसी की आवश्यकता नहीं, परन्तु सभी प्राणियों को उसकी आवश्यकता है। उसे किसी ने पैदा नहीं किया, न वह किसी का पिता है और उसके जैसा कोई अर्थात् कुछ भी नहीं।"

(क़ुरआन)

ईश्वर या ख़ुदा एक ही है

दुनिया में इनसानों की अकसरियत किसी-न-किसी धर्म से ताल्लुक़ रखती है। अक्सर इनसान अपने माता-पिता को जिस धर्म का पालन करते हुए पाता है या अपने घर में बचपन से जिस धर्म का पालन होते हुए देखता है उसे ही स्वीकार करता है। धर्म की विभिन्नता के बावजूद भी ईश्वर की धारणा के सम्बन्ध में इनसानों की ज़्यादातर तादाद इस बात से सहमत है कि ईश्वर या ख़ुदा एक ही है, दूसरा नहीं है।

सारी दुनिया का मालिक एक ही है

किन्तु अफ़सोस है कि इनसान उस एक ईश्वर को, जो हर जगह मौजूद है, छोड़कर अपने-अपने तरीक़ों से ढूंढ़ने लगते हैं। कुछ लोग दरगाहों-मजारों में ईश्वर को ढूंढ़ते नज़र आते हैं तो कुछ लोग पत्थर, पानी, सूरज, आग, जानवर, मूर्ति आदि जैसी चीज़ों में। लोग इन चीज़ों में ईश्वर को ढूढ़ते ही नहीं, बल्कि उन्हें ईश्वर मानकर उनकी ही पूजा, अर्चना और इबादत करने लगते हैं। कुछ लोग यह सब अपने पूर्वजों से सीखते हैं जो परंपरागत रूप से चली आ रही होती हैं और कुछ लोग अपनी निजी विधि का ईजाद करके अपनाए हुए होते हैं। यह सब ग़लत है या सही, इस पर वे विचार नहीं करते।

हम यह भी जानते हैं कि इनसान अपनी इच्छानुसार अपनी आस्था धारण करता है। ऐसा करने के लिए वह दुनियावी एतिबार से स्वतंत्र

भी है। लेकिन ईश्वरीय शिक्षा के अनुसार मनुष्य स्वच्छंदता के लिए नहीं है कि जो चाहे करे। जिसे चाहे ईश्वर माने और जिसकी चाहे पूजा करे और वह इस रीति से परलोक में भी सफल हो जाएगा, ऐसा नहीं है। बल्कि हर इनसान से अपेक्षा की गई है कि वह अपने स्रष्टा की आज्ञा के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे, तभी उसको सफलता प्राप्त होगी।

क्योंकि ईश्वर ने इनसानों को इसलिए पैदा किया है कि इनसान उसी की पूजा करे न कि उसकी बनाई हुई चीज़ों की या किसी और की। अर्थात् इनसान का यह परम कर्तव्य बनता है कि वह उसी वास्तविक पालनहार रब का होकर रहे। यद्यपि इसके लिए उन परंपराओं का छोड़ना जिन्हें इनसानों ने बना रखा है, बहुत मुश्किल है। इसमें ईश्वरीय शिक्षा अपनाने पर और परंपरागत शिक्षा को छोड़ने पर सबसे पहले समाज हमारे ख़िलाफ़ हो जाता है।

लेकिन साहसी एवं खोजी मनुष्य जो अपने अस्तित्व को जानने की इच्छा रखता है, वीरतापूर्ण एक ईश्वर की शरण में चला जाता है और उसी एक ईश्वर पर यक़ीन करता है।

सत्य यह है कि जो वास्तव में एक ईश्वर से प्रेम करते हैं सत्य-मार्ग पर जा पहुँचते हैं और झूठे फ़र्ज़ी ख़ुदाओं को छोड़कर एक ईश्वर को पूजने लगते हैं। एकेश्वरवाद की शिक्षा लगभग सभी आस्तिक धर्मों के मुख्य धर्मग्रन्थों में पाई जाती है। अतः हमें चाहिए कि हम अपने धर्म-ग्रंथों की पवित्र शिक्षाओं पर नज़र डालें और सत्य मार्ग पर चलने की कोशिश करें। ईश्वरीय मार्ग को अपनाएँ और उस मार्ग, उस परम्परा को छोड़ दें जो मिथ्यावादियों द्वारा बनाई गई हैं।

अब आइए उस एक ईश्वर के प्रति धारणा कुछ बड़े धर्म-ग्रंथों में देखते हैं। सबसे पहले हम हिन्दू धर्म-ग्रंथों की शिक्षाओं पर नज़र डालते हैं।

हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद की धारणा

(1) एकमेवाद्वितीयं।। (छान्दोग्य उपनिषद—6:2:1)

अर्थात् : ईश्वर केवल एक ही है, किसी दूसरे के बग़ैर।

(2) न तस्य प्रतिमा अस्ति।। (यजुर्वेद-32:3)

अर्थात् : उसकी कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है।

(3) स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। (यजुर्वेद-40:8)

अर्थात् : वह ईश्वर उज्ज्वल प्रकाशमान है, ईश्वर शरीरहीन है। वह ईश्वर व्रणहीन है, वह ईश्वर स्नायुहीन है, वह पवित्र है। अर्थात् वह अंधकार नहीं है और किसी चीज़ को अंधकार में नहीं रखता। उसका कोई शरीर नहीं है और न ही उसे इसकी आवश्यकता है। कोई भी मानवीय कमज़ोरी उसमें नहीं है और वह पवित्र है।

(4) अंधन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते। ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳरताः।। (यजुर्वेद-40:9)

भावार्थ : जो मनुष्य समस्त जड़ जगत् अनादि नित्य कारण का उपासना भाव से स्वीकार करते हैं, वे अविद्या को प्राप्त होकर क्लेश को प्राप्त होते और जो उस कारण से उत्पन्न स्थूल सूक्ष्म कार्य-कारणाख्य अनित्य संयोगजन्य कार्यजगत् को ईष्ट उपास्य मानते हैं, वे गाढ़ अविद्या

को पाकर अधिकतर क्लेश को प्राप्त होते हैं, इसलिए सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा की है सब सदा उपासना करें।

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

(5) देव महाँ असि ॥ (अथर्ववेद-20:58:3)

अर्थात् : ईश्वर सबसे महान है।

(6) न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः ॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद-6:9)

अर्थात् : ईश्वर का न कोई माँ-बाप है, न कोई उसका अधिपति स्वामी है।

(7) मा चिदन्यद्वि शंसत ॥ (ऋग्वेद-8:1:1)

अर्थात् : परमात्मा से अन्य की उपासना न करो।

(8) य एक इत्तमु ष्टुहि ॥ (ऋग्वेद-6:45:16)

अर्थात् : उसी की पूजा करो, क्योंकि उस जैसा कोई नहीं और वह अकेला है।

(9) इस सन्दर्भ में ईश्वर के स्वरूप और उसकी धारणा के सम्बन्ध में यह सुप्रसिद्ध मंत्र भी देखा जा सकता है, जो ब्रह्मसूत्र के नाम से सुविख्यात है—

एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ति नेह ना नास्ति किंचन ॥

अर्थात् : ईश्वर एक है, दूसरा नहीं है, नहीं है, ज़रा भी नहीं है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वरीय सन्देश

श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दू धर्म में सबसे ज़्यादा पवित्र और मान्य धार्मिक ग्रंथ है। इसमें है—

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता 7:20)

"परन्तु उन-उन कामनाओं से जिनका ज्ञान हरा गया है, ऐसे मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव से नियंत्रित होकर उस-उस अर्थात् देवताओं के उन-उन नियमों को धारण करते हुए अन्य देवताओं के शरण हो जाते हैं।"

(गीता प्रबोधनी)

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता 10:3)

"जो मनुष्य मुझे अजन्मा अनादि और सम्पूर्ण लोकों का महान ईश्वर जानता है अर्थात् सन्देह रहित स्वीकार कर लेता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान है और वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।" (गीता प्रबोधनी)

इस तरह हम देखते हैं, ऊपर लिखी हुई पवित्र ग्रंथों की शिक्षाओं में हमें 'एकेश्वरवाद' ईश्वर के एक होने का प्रमाण मिलता है। जैसे दिन के उजाले में सूरज चमकता है और उसके चमक को झुठलाया नहीं जा सकता है, उसी प्रकार इन शिक्षाओं को झूठलाया नहीं जा सकता है। फिर भी अक्सर इनसान अपने ग्रंथों के ख़िलाफ़ ही अपना जीवन गुज़ार रहा है और उसे ख़बर भी नहीं है। इस अंधकार की वजह यह हो सकती है कि हम सत्य-मार्ग को अपनाना नहीं चाहते इसलिए हम पवित्र धर्म-ग्रंथों के शिक्षाओं पर ग़ौर नहीं करते हैं, और

उन नियम को स्वीकार कर लेते हैं जिसको धर्म के ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ के लिए बनाया है। दूसरी वजह यह हो सकती है कि हमने कभी धर्म की शिक्षाओं पर ग़ौर ही नहीं किया।

ईसाई धर्म में एकेश्वरवाद की धारणा

ईसाई धर्म का पवित्र ग्रंथ बाइबल है जिसमें लिखा है—

(1) My Father (God) is greater than I

"मेरे पिता (ईश्वर) मुझ से महान है।" (यूहन्ना-14:28)

(2) My father greater than all-

"मेरे पिता (ईश्वर) सबसे महान है।" (यूहन्ना-10:29)

(3) But if I cast out devils by sprit of God then the kingdom of God is come unto you.

"और मैं परमेश्वर की मदद से शैतानों को भगाता हूँ तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" (मत्ती-12:28)

(4) But if I with The finger of God cast out devils no doubt the kingdom of God is come upon you.

"मैं परमेश्वर की उंगली से शैतानों को बाहर निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा।" (लूका-11:20)

(5) And the word which you hear is not mine but the father's which sent me.

"और तुम जो वचन सुनते हो, वह मेरे नहीं हैं, बल्कि उस परमेश्वर का है जिसने मुझे भेजा।" (यूहन्ना-14:24)

(6) And Jesus answered him the first of all the Commandments is hear o Israel the Lord or God is one Lord.

"यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है। हे

इसराईल! सुनो प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही परमेश्वर है।"

(मरकुस-12:29)

(7) There is One God and there is none other but he.

"वह (ईश्वर) एक ही है और उसे छोड़ कोई ईश्वर नहीं।"

(मरकुस-12:32)

(8) I can of mine own self do nothing: as I hear, I judge: and my judgment is just; because I seek not mine own will, but the will of the Father which hath sent me.

"मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।" (युहन्ना-5:30)

(9) Why you call me good? there is none good but one, that is, God.

"तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है। वह ईश्वर है।" (मत्ती 19:17)

हम जानते हैं कि बाइबल ईसाइयों का पवित्र धर्म-ग्रंथ है। जिसमें साफ़ तौर से परमेश्वर के एक होने की शिक्षा मिलती है। फिर भी उनके करोड़ों या उससे भी ज़्यादा लोग अपने धर्म-ग्रंथ की शिक्षा के विरुद्ध आचरण अपनाए हुए हैं और फिर भी कहते हैं कि हम ईसाई हैं। अतः हर ईसाई को चाहिए कि एक परमेश्वर के सिवा किसी अन्य की पूजा न करें।

सिख धर्म में एकेश्वरवाद की धारणा

सिख धर्म का मूल मंत्र है—

1. १ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु,

अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसाद।

अर्थात् "केवल एक ख़ुदा का अस्तित्व है जो वास्तव में सभी सृष्टि का निर्माण करनेवाला है। उसे कोई डर नहीं है, वह किसी से शत्रुता नहीं रखता। वह किसी से पैदा नहीं हुआ और कभी भी समाप्त होनेवाला नहीं है। वह हमेशा-हमेशा के लिए है। वह ख़ुद से अपना वजूद (आत्म-निर्भर) रखनेवाला है। यह सब गुरु की कृपा से उपलब्ध हो सका है।" (श्री गुरु ग्रंथ साहिब-पन्ना-1)

2. "एक परमात्मा की भक्ति के बिना सभी कर्म झूठे हैं। हे नानक! वही इनसान भाग्यवान हैं, जिनका परम सत्य परमेश्वर के साथ अटूट स्नेह बना हुआ है।" (श्री गुरुग्रंथ साहिब, पन्ना-709)

3. "वह ईश्वर सभी को पैदा करनेवाला है और हम सब उसके बन्दे हैं।" (श्री गुरु ग्रंथ साहिब पन्ना-611)

अतः सिख धर्म एक ईश्वर की पूजा का आदेश देता है। अब कोई इनसान किसी अच्छे और सुचरित्रवान इनसान की ईश्वर की भाँति उपासना करे तो वह बिलकुल ग़लत है। क्योंकि वह इनसान अच्छा और बहुत अच्छा हो सकता है, लेकिन वह ईश्वर नहीं हो सकता। ऊपर दी हुई गुरुवाणी से साफ़ पता चलता है कि ईश्वर को किसी ने पैदा नहीं किया, वह शाश्वत और अविनाशी है। हम ख़ूब जानते हैं कि दुनिया में जिनकी मूर्ति, तस्वीर, मजार या दरगाह बनाकर पूजा की जा रही है, वे सब इनसान थे और बहुत अच्छे इनसान थे जो पैदा भी हुए और मृत्यु भी पाई है।

ईश्वरीय ग्रन्थ और सद्‌बुद्धि भी कहती है कि पैदा होनेवाला और मर जानेवाला इनसान हरगिज़ ईश्वर नहीं हो सकता। हम अच्छे इनसान की इज़्ज़त और सम्मान कर सकते हैं, किन्तु उसको इष्ट-प्रभु पूज्य मानकर इबादत नहीं कर सकते। इबादत तो मात्र एक ईश्वर की ही की जानी चाहिए।

इस्लाम धर्म में एकेश्वरवाद की धारणा

अब हम इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रंथ क़ुरआन को देखते हैं। क़ुरआन ने अपनी इन चार आयतों में ईश्वर की पहचान इस तरह दी है—

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ

(1) वह अल्लाह (ईश्वर) एक ही है। (सूरा-112, आ॰-1)

اَللّٰهُ الصَّمَدُ

(2) वह अल्लाह बेनियाज़ है। (सूरा-112, आ॰-2)

बेनियाज़ का मतलब उस ईश्वर को किसी की ज़रूरत नहीं है, किन्तु सबको उस ईश्वर की ज़रूरत है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ

(3) ईश्वर न जनित है और न जन्य है। (सूरा-112, आ॰-3)

अर्थात् जिस प्रकार एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से जन्म लेता और जन्म देता है, उस रीति से ईश्वर न किसी का पिता है और न किसी का पुत्र है।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ

(4) उस अल्लाह (ईश्वर) के बराबर कुछ भी नहीं है।

(सूरा-112, आ॰-4

इस्लाम धर्म के मुताबिक़ अगर कोई इनसान अपने को ईश्व होने का दावा करता है तो उसमें ये चार ख़ूबियाँ मौजूद होनी चाहि या अगर कोई किसी को पूजता है तो उसको चाहिए की ये चा ख़ूबियाँ उसमें ढूँढ़े और अगर ये ख़ूबियाँ उसमें नहीं हैं तो याद र कि पूरी दुनिया के इनसान मिलकर, जब से दुनिया बनी है तब क़यामत (प्रलय) के दिन तक उसकी पूजा, इबादत करते रहें तब भ वह ईश्वर (अल्लाह) नहीं बन सकता।

इसके उपरांत भी कई ख़ुदाओं (बहुदेववाद) को माननेवाले लोग का कहना है कि एक से अधिक ईश्वरवाद की आस्था सही है।

अगर ये बात सही होती तो मानव को छोड़िए, एक से अधि ईश्वर स्वयं एक-दूसरे से लड़ने में लगे रहते। हर ख़ुदा एक-दूसरे मुक़ाबले में अपनी इच्छा और अपना काम करना चाहता। कोई ईश्व कहता रात होगी, कोई कहता दिन होगा, कोई ईश्वर कहता बारि होगी, तो कोई कहता धूप होगी, कोई ईश्वर कहता सर्दी होगी त कोई कहता गर्मी होगी। हम जानते हैं कि ऐसे हज़ारों मामले होते जिनसे पूरी दुनिया का निज़ाम तबाह और बर्बाद हो जाता। यह दुनिय ख़ुदाओं के युद्ध का मैदान होती। इनसान तो तबाह होता ही, प ख़ुदाओं के युद्ध में कोई हारता तो कोई जीतने की कोशिश करता

अधिक ख़ुदाओं की भ्रान्ति को तोड़ते हुए क़ुरआन मजीद

वर्णित हुआ है कि परमेश्वर एक ही है और उसका निज़ाम भी एक ही है।

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔

अर्थात् : अगर आसमान और ज़मीन में एक ईश्वर (अल्लाह) के सिवा दूसरे ईश्वर भी होते तो (ज़मीन और आसमान) दोनों का निज़ाम बिगड़ जाता। अतः पवित्र है ईश्वर, अर्श का मालिक उन बातों से जो ये लोग बना रहे हैं। (क़ुरआन, 21:22)

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔

"अल्लाह (ईश्वर) ने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया है, और कोई दूसरा ख़ुदा उसके साथ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी पैदा की हुई चीज़ों को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते। पवित्र है अल्लाह (ईश्वर) उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं।"

(क़ुरआन, 23:91)

अब कुछ भाइयों का कहना है—ख़ुदाओं (ईश्वरों) की अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ हैं। जैसे कोई सूरज का ख़ुदा है, तो कोई चाँद का, मतलब सबकी भिन्न-भिन्न ज़िम्मेदारियाँ हैं। आप सोचें सर्व-शक्तिमान ईश्वर बहुत से निज़ाम को चलाने में अयोग्य कैसे हो सकता

है? बिलकुल नहीं। क़ुरआन में उल्लिखित है—

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ـ

"ज़मीन और आसमानों का मालिक अल्लाह है, और उसकी क़ुदरत सब पर हावी है।" (क़ुरआन, 3:189)

अर्थात् अल्लाह (ईश्वर) हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।

कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते यानी वे ईश्वर के अस्तित्व के इनकारी हैं। इसी प्रकार जो लोग एक ईश्वर को मानकर भी दूसरों की पूजा करते हैं ऐसे लोग ईश्वर को मानते हुए भी ईश्वर के इनकारी ही हैं, क्योंकि वे लोग भी ईश्वर के एक अस्तित्व के होने का इनकार करते हैं।

निष्कर्ष

- पवित्र धर्म-ग्रंथों में साफ़ तौर पर लिखा है कि ईश्वर जिसे अरबी भाषा में अल्लाह कहते हैं वह एक ही है। इसे हमें हृदय से स्वीकार करना चाहिए।
- इसलिए हम इनसानों को चाहिए कि एक ईश्वर (अल्लाह) के सिवाय किसी दूसरे को ईश्वर न बनाएँ और उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत (पूजा) भी न करें।

हम आपके आभारी हैं कि आपने इस पुस्तिका का अध्ययन किया। अब आप खुद सोचें, समझें और फ़ैसला करें। ईश्वर हमें सत्य मार्ग पर चलने की सामर्थ्य प्रदान करे। (आमीन)

—:—